चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक 25.2.2021.....पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....6-8.....

उन्नत किस्मों पर दें जोर : डॉ. जीपी सिंह

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। कृषि वैज्ञानिक समय पर बिजाई की जाने वाली व अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें ताकि किसानों की आमदनी में इजाफा हो सके और वे खुशहाल हो सकें। यह बात भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान करनाल के निदेशक डॉ. जीपी सिंह ने कही। वे बुधवार को विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के गेहूं व जौ अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के बाद वैज्ञानिकों से रूबरू हो रहे थे।

उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच-1270 किस्म का अधिक से अधिक बीज तैयार करने का आह्वान किया ताकि किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने भी वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे ऐसी तकनीकों एवं विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों को विकसित करने पर जोर दें, जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक लाभ मिल सके। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एके छाबड़ा, प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. सतीश खोखर सहित गेहूं व जौ अनुभाग के वैज्ञानिक मौजूद रहे।

गेहूं एवं जौ अनुभाग का दौरा करते भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान करनाल के निदेशक डॉ. जीपी. सिंह व विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह। संवाद

भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान करनाल के निदेशक ने किया दौरा

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	**24.02.2021**	--	--

समय पर बिजाई वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर करें अधिक शोध : डॉ. जी.पी. सिंह

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 24 फरवरी : कृषि वैज्ञानिक समय पर बिजाई की जाने वाली व अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें ताकि किसानों की आमदनी में इजाफा हो सके और वे खुशहाल हो सकें। उक्त विचार भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक डॉ. जी.पी. सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के गेहूं व जौ अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत वैज्ञानिकों से रूबरू हो रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि उनके द्वारा विकसित गेहूं की आधुनिक व उन्नत किस्मों की देशभर में मांग रहती है, जिसकी बदौलत देश के खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का अहम योगदान है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच-1270 के लिए वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि इस किस्म की औसतन पैदावार 75.85 क्विंटल प्रति हेक्टेयर आंकी गई है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसलिए इस किस्म का अधिक से अधिक बीज तैयार करें और इसका प्रचार व प्रसार करते हुए किसानों को उपलब्ध करवाएं ताकि किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने भी वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे ऐसी तकनीकों एवं विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों को विकसित करने पर जोर दें जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि यहां से विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों को कृषि विज्ञान केंद्रों

व अन्य माध्यमों से ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने की कोशिश करें। किसानों को भी अपने स्तर पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से मिलकर अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे अपनी फसलों पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा सिफारिश किए गए कीटनाशकों का ही उनकी सलाहनुसार प्रयोग करें ताकि समय रहते फसलों पर आने वाली बिमारियों की रोकथाम की जा सके और फसलों से अधिकतम पैदावार हासिल की जा सके। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने विश्वविद्यालय में चल रहे विभिन्न अनुसंधान कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यहां के वैज्ञानिक अपनी अथक मेहनत व लगन से निरंतर विश्वविद्यालय की गरिमा को चार-चांद लगा रहे हैं, जिसकी बदौलत राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय की अलग पहचान है। यहां से विकसित उन्नत किस्मों की न केवल हरियाणा बल्कि अन्य राज्यों में भी बहुत अधिक मांग बढ़ रही है। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. ए.के. छाबड़ा, प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. सतीश खोखर सहित गेहूं व जौ अनुभाग के वैज्ञानिक मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	**25.02.2021**	--	--

समय पर बिजाई वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर करें अधिक शोध : जीपी सिंह

हिसार, राज पराशर (पंजाब केसरी) : कृषि वैज्ञानिक समय पर बिजाई की जाने वाली व अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें ताकि किसानों की आमदनी में इजाफा हो सके और वे खुशहाल हो सकें। उक्त विचार भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक डा. जीपी सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के गेहूं व जौ अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत वैज्ञानिकों से रूबरू हो रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि उनके द्वारा विकसित गेहूं की आधुनिक व उन्नत किस्मों की देशभर

- **भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक ने किया दौरा, वैज्ञानिकों से किया आह्वान**

में मांग रहती है, जिसकी बदौलत देश के खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का अहम योगदान है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच-1270 के लिए वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि इस किस्म की औसतन पैदावार 75.85 क्विंटल प्रति हेक्टेयर आंकी गई है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसलिए इस किस्म का अधिक से अधिक बीज तैयार करें और इसका प्रचार व प्रसार करते हुए किसानों को उपलब्ध करवाएं ताकि किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने भी वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे ऐसी तकनीकों एवं विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों को विकसित करने पर जोर दें जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि यहां से विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों को कृषि विज्ञान केंद्रों व अन्य माध्यमों से ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने की कोशिश करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जगमार्ग	**24.02.2021**	--	--

समय पर बिजाई वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर करें अधिक शोध: डॉ. जीपी सिंह

➪ भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक ने किया दौरा

जगमार्ग न्यूज

हिसार। कृषि वैज्ञानिक समय पर बिजाई की जाने वाली व अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें ताकि किसानों की आमदनी में इजाफा हो सके और वे खुशहाल हो सकें।

यह बात भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक डॉ. जीपी सिंह ने कही। वे हरियाणा कृषि विवि. के कृषि महाविद्यालय के गेहूं व जौ अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत वैज्ञानिकों से रूबरू हो रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि उनके द्वारा विकसित गेहूं की आधुनिक व उन्नत किस्मों की देशभर में मांग रहती है, जिसकी बदौलत देश के खाद्यान भंडारण में प्रदेश का अहम योगदान है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच-1270 के लिए वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि इस किस्म की औसतन पैदावार 75.85 क्विंटल प्रति हेक्टेयर आंकी गई है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसलिए इस किस्म का अधिक से अधिक बीज तैयार करें और इसका प्रचार व प्रसार करते हुए किसानों को उपलब्ध करवाएं ताकि किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने भी वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे ऐसी तकनीकों एवं विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों को विकसित करने पर जोर दें जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि यहां से विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों को कृषि विज्ञान केंद्रों व अन्य माध्यमों से ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने की कोशिश करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**24.02.2021**	--	--

भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक ने किया दौरा, वैज्ञानिकों से किया आह्वान

समय पर बिजाई वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर करें अधिक शोध : डॉ. सिंह

पांच बजे न्यूज

हिसार। कृषि वैज्ञानिक समय पर बिजाई की जाने वाली व अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें ताकि किसानों की आमदनी में इजाफा हो सके और वे खुशहाल हो सकें। उक्त विचार भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक डॉ. जी.पी. सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के गेहूं व जौ अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत वैज्ञानिकों से रूबरू हो रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि उनके द्वारा विकसित गेहूं की आधुनिक व उन्नत किस्मों की देशभर में मांग रहती है, जिसकी बदौलत देश के खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का अहम योगदान है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच-1270 के लिए वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि इस किस्म की औसतन पैदावार 75.85 क्विंटल प्रति हेक्टेयर आंकी गई है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसलिए इस किस्म का अधिक से अधिक बीज तैयार करें और इसका प्रचार व प्रसार करते हुए किसानों को उपलब्ध करवाएं ताकि किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने भी वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे ऐसी तकनीकों एवं विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों को विकसित करने पर जोर दें जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि यहां से विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों को कृषि विज्ञान केंद्रों व अन्य माध्यमों से ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने की कोशिश करें। किसानों को भी अपने स्तर पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से मिलकर अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे अपनी फसलों पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा सिफारिश किए गए कीटनाशकों का ही उनकी सलाहनुसार प्रयोग करें ताकि समय रहते फसलों पर आने वाली बिमारियों की रोकथाम की जा सके और फसलों से अधिकतम पैदावार हासिल की जा सके।

यहां से विकसित उन्नत किस्मों की अन्य राज्यों में भी बढ़ रही मांग

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने विश्वविद्यालय में चल रहे विभिन्न अनुसंधान कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यहां के वैज्ञानिक अपनी अथक मेहनत व लगन से निरंतर विश्वविद्यालय की गरिमा को चार-चांद लगा रहे हैं, जिसकी बदौलत राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय की अलग पहचान है। यहां से विकसित उन्नत किस्मों की न केवल हरियाणा बल्कि अन्य राज्यों में भी बहुत अधिक मांग बढ़ रही है। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. ए.के. छाबड़ा, प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. सतीश खोखर सहित गेहूं व जौ अनुभाग के वैज्ञानिक मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	**24.02.2021**	--	--

समय पर बिजाई वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर करें अधिक शोध : डॉ. जीपी सिंह

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। कृषि वैज्ञानिक समय पर बिजाई की जाने वाली व अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें ताकि किसानों की आमदनी में इजाफा हो सके और वे खुशहाल हो सकें। उक्त विचार भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक डॉ. जी.पी. सिंह ने कहे। वे कृषि महाविद्यालय के गेहूं व जौ अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत वैज्ञानिकों से रूबरू हो रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि उनके द्वारा विकसित गेहूं की आधुनिक व उन्नत किस्मों की देशभर में मांग रहती है, जिसकी बदौलत देश के खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का अहम योगदान है।

कुलपति प्रो. समर सिंह ने भी वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे ऐसी तकनीकों एवं विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों को विकसित करने पर जोर दें जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि यहां से विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों को कृषि विज्ञान केंद्रों व अन्य माध्यमों से ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने की कोशिश करें। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. ए. के. छाबड़ा, प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. सतीश खोखर सहित गेहूं व जौ अनुभाग के वैज्ञानिक मौजूद रहे।

हिसार। गेहूं एवं जौ अनुभाग का दौरा करते कुलपति प्रो. समर सिंह व निदेशक डॉ. जी.पी. सिंह।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**24.02.2021**	--	--

उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें वैज्ञानिक : सिंह

हिसार/24 फरवरी/रिपोर्टर

कृषि वैज्ञानिक समय पर बिजाई की जाने वाली व अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें ताकि किसानों की आमदनी में इजाफा हो सके और वे खुशहाल हो सकें। उक्त विचार भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक डॉ. जीपी सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के गेहूं व जौ अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत वैज्ञानिकों से रूबरू हो रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि उनके द्वारा विकसित गेहूं की आधुनिक व उन्नत किस्मों की देशभर में मांग रहती है, जिसकी बदौलत देश के खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का अहम योगदान है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच-1270 के लिए वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि इस किस्म की औसतन पैदावार 75-85 क्विंटल प्रति हैक्टेयर आंकी गई है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसलिए इस किस्म का अधिक से अधिक बीज तैयार करें और इसका प्रचार व प्रसार करते हुए किसानों को उपलब्ध करवाएं ताकि किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने भी वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे ऐसी तकनीकों एवं विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों को विकसित करने पर जोर दें जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि यहां से विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों को कृषि विज्ञान केंद्रों व अन्य माध्यमों से ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने की कोशिश करें। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि यहां यहां से विकसित उन्नत किस्मों की न केवल हरियाणा बल्कि अन्य राज्यों में भी बहुत अधिक मांग बढ़ रही है। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एके छाबड़ा, प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. सतीश खोखर आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार न्यूज	**24.02.2021**	--	--

समय पर बिजाई वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर करें अधिक शोध : डॉ. जीपी सिंह

हिसार, 24 फरवरी (राजकुमार) : कृषि वैज्ञानिक समय पर बिजाई की जाने वाली व अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें ताकि किसानों की आमदनी में इजाफा हो सके और वे खुशहाल हो सकें। यह बात भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक डॉ. जीपी सिंह ने कही। वे हरियाणा कृषि विवि. के कृषि महाविद्यालय के गेहूं व जौ अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत वैज्ञानिकों से रूबरू हो रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि उनके द्वारा विकसित गेहूं की आधुनिक व उन्नत किस्मों की देशभर में मांग रहती है, जिसकी बदौलत देश के खाद्यान भंडारण में प्रदेश का अहम योगदान है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच-1270 के लिए वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि इस किस्म की औसतन पैदावार 75.85 क्विंटल प्रति हेक्टेयर आंकी गई है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसलिए इस किस्म का अधिक से अधिक बीज तैयार करें और इसका प्रचार व प्रसार करते हुए किसानों को उपलब्ध करवाएं ताकि किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके।

भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक ने किया दौरा, वैज्ञानिकों से किया आह्वान

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने भी वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे ऐसी तकनीकों एवं विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों को विकसित करने पर जोर दें जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि यहां से विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों को कृषि विज्ञान केंद्रों व अन्य माध्यमों से ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने की कोशिश करें। किसानों को भी अपने स्तर पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से मिलकर अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे अपनी फसलों पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा सिफारिश किए गए कीटनाशकों का ही उनकी सलाहनुसार प्रयोग करें ताकि समय रहते फसलों पर आने वाली बिमारियों की रोकथाम की जा सके और फसलों से अधिकतम पैदावार हासिल की जा सके। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एके छबड़ा, प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. सतीश खोखर सहित गेहूं व जौ अनुभाग के वैज्ञानिक मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जीवन आधार	**24.02.2021**	**Online**	--

समय पर बिजाई वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर करें अधिक शोध : डॉ. जीपी सिंह

भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक ने किया दौरा, वैज्ञानिकों से किया आह्वान

हिसार,

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 25.2.2021 पृष्ठ संख्या 5 कॉलम 7-8

खुम्ब उत्पादन तकनीक पर ऑनलाइन कार्यशाला का समापन

कृषि अवशेषों का खुम्ब उत्पादन के लिए करें प्रयोगः डॉ. संदीप भाकर

भास्कर न्यूज | हिसार

किसान फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुम्ब उत्पादन के लिए प्रयोग में ला सकते हैं। इससे पर्यावरण प्रदूषण कम होने के साथ-साथ किसानों की आय भी बढ़ेगी। यह कथन चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहायक वैज्ञानिक डॉ. संदीप भाकर ने तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन पर व्यक्त किए।

उन्होंने बताया कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। प्रशिक्षण में खुम्ब से संबंधित विभिन्न विषयों को अनेक वैज्ञानिकों द्वारा विस्तार से सांझा किया गया। प्रशिक्षण के सह-संयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि सफेद बटन खम्ब, ढींगरी खुम्ब व धान के पुआल की खुम्ब के लिए प्रदेश का मौसम अनुकूल है। उन्होंने बताया कि खुम्ब एक संतुलित आहार है जो पोषण व औषधीय गुणों से भरपूर है। खुम्ब में कैलोरी और वसा की मात्रा कम होने की वजह से यह वजन न सिर्फ घटाने में सहायक है, बल्कि इसमें प्रोटीन, विटामिन सी, विटामिन बी, विटामिन डी, कॉपर, पोटाशियम, फास्फोरस, सेलेनियम, फाइओकेमिकल्स और एंटी आक्सीडेन्टस जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में होते है जो विभिन्न रोगों से बचाते हैं। इसके अलावा कई औषधीय गुण भी विद्यमान होते हैं। डॉ. मनमोहन ने खुम्ब में होने वाली मुख्य बिमारियों की रोकथाम के उपाय बताए। डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने मशरूम में आने वाले मुख्य कीट, उनसे होने वाले नुकसान, लक्षणों व प्रबधंन के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**24.02.2021**	--	--

खुम्ब उत्पादन तकनीक पर ऑनलाइन कार्यशाला का समापन

कृषि अवशेषों को जलाने की बजाय खुम्ब उत्पादन के लिए करें प्रयोग : डॉ. भाकर

पांच बजे न्यूज

हिसार। किसान फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुम्ब उत्पादन के लिए प्रयोग में ला सकते हैं। इससे एक ओर जहां पर्यावरण प्रदुषित नहीं होगा वहीं किसानों की आय में भी बढ़ोतरी होगी। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहायक वैज्ञानिक डॉ. संदीप भाकर ने बतौर प्रशिक्षण के सह-संयोजक कहे। वे विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया गया।

संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण)डॉ. अशोक गोदारा ने प्रशिक्षणार्थियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इस प्रशिक्षण में खुम्ब से संबंधित विभिन्न विषयों को अनेक वैज्ञानिकों द्वारा विस्तार से सांझा किया गया। प्रशिक्षण के सह-संयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि सफेद बटन खम्ब, ढींगरी खुम्ब व धान के पुआल की खुम्ब के लिए हरियाणा प्रदेश का मौसम अनुकूल है। उन्होंने बताया कि खुम्ब एक संतुलित आहार है जो पोषण व औषधीय गुणों से भरपूर है। खुम्ब में कैलोरी और वसा की मात्रा कम होने की वजह से यह न सिर्फ वजन को बढ़ने से रोकने और वजन घटाने में सहायक है बल्कि इसमें प्रोटीन, विटामिन सी, विटामिन बी, विटामिन डी, कॉपर, पोटाशियम, फास्फोरस, सेलेनियम, फाइओकेमिकल्स और एंटी आक्सीडेन्टस जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते है जो व्यक्ति को विभिन्न तरह के रोगों से दूर रखने में मदद करते हैं। इसके अलावा कई औषधीय गुण भी विद्यमान होते हैं। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी.के. शर्मा ने मशरूम के मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार करने की विधि पर प्रकाश डाला। पौध रोग विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राकेश चुघ ने ढींगरी खुम्ब तथा कीड़ा जड़ी खुम्ब को उगाने की विधि पर प्रकाश डाला। डॉ. मनमोहन ने खुम्ब में होने वाली मुख्य बिमारियों की रोकथाम के उपाय बताए। डॉ. जगदीप ने केसिंग मिश्रण को तैयार करने की व्यावहारिक जानकारी दी। डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने मशरूम में आने वाले मुख्य कीट, उनसे होने वाले नुकसान, लक्षणों व प्रबधंन के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी और साथ ही उन्होंने किसानों को खुम्ब गृह में सफाई रखने की विशेष सलाह दी। उन्होंने बताया कि इसकी साफ-सफाई का ध्यान रखने से इस प्रकार के कीड़े-मकोड़ों का कम प्रकोप होता है। डॉ. निर्मल कुमार ने खुम्ब का आर्थिक विश्लेषण के माध्यम से खुम्ब को लाभकारी व्यवसाय के रूप में इसकी महत्ता का जिक्र किया। इस प्रशिक्षण में हरियाणा व पंजाब के 40 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण हासिल किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	**24.02.2021**	--	--

कृषि अवशेषों को जलाने की बजाय खुम्ब उत्पादन के लिए करें प्रयोग : डॉ. संदीप भाकर

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 24 फरवरी : किसान फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुम्ब उत्पादन के लिए प्रयोग में ला सकते हैं। इससे एक ओर जहां पर्यावरण प्रदुषित नहीं होगा वहीं किसानों की आय में भी बढ़ोतरी होगी। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहायक वैज्ञानिक डॉ. संदीप भाकर ने बतौर प्रशिक्षण के सह-संयोजक कहे। वे विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर. एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया गया। संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने प्रशिक्षणार्थियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक

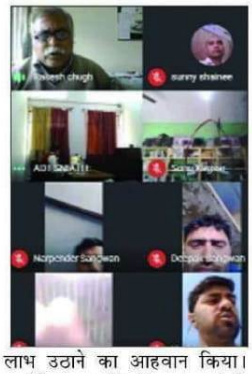

लाभ उठाने का आहवान किया। उन्होंने बताया कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इस प्रशिक्षण में खुम्ब से संबंधित विभिन्न विषयों को अनेक वैज्ञानिकों द्वारा विस्तार से सांझा किया गया। प्रशिक्षण के सह-संयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि सफेद बटन खम्ब, ढींगरी खुम्ब व धान के पुआल की खुम्ब के लिए हरियाणा प्रदेश का मौसम अनुकूल है। उन्होंने बताया कि खुम्ब एक संतुलित आहार है जो पोषण व औषधीय गुणों से भरपूर है। खुम्ब में कैलोरी और वसा की मात्रा कम होने की वजह से यह न सिर्फ वजन को बढ़ने से रोकने और वजन घटाने में सहायक है बल्कि इसमें प्रोटीन, विटामिन सी, विटामिन बी, विटामिन डी, कॉपर, पोटाशियम, फास्फोरस, सेलेनियम, फाइओकेमिकल्स और एंटी आक्सीडेन्टस जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते है जो व्यक्ति को विभिन्न तरह के रोगों से दूर रखने में मदद करते हैं। इसके अलावा कई औषधीय गुण भी विद्यमान होते हैं। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. के. शर्मा ने मशरूम के मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार करने की विधि पर प्रकाश डाला। पौध रोग विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राकेश चुघ ने ढींगरी खुम्ब तथा कीड़ा जड़ी खुम्ब को उगाने की विधि पर प्रकाश डाला। डॉ. मनमोहन ने खुम्ब में होने वाली मुख्य बिमारियों की रोकथाम के उपाय बताए। डॉ. जगदीप ने केसिंग मिश्रण को तैयार करने की व्यावहारिक जानकारी दी। डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने मशरूम में आने वाले मुख्य कीट, उनसे होने वाले नुकसान, लक्षणों व प्रबधंन के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी और साथ ही उन्होंने किसानों को खुम्ब गृह में सफाई रखने की विशेष सलाह दी। उन्होंने बताया कि इसकी साफ-सफाई का ध्यान रखने से इस प्रकार के कीड़े-मकोड़ों का कम प्रकोप होता है। डॉ. निर्मल कुमार ने खुम्ब का आर्थिक विश्लेषण के माध्यम से खुम्ब को लाभकारी व्यवसाय के रूप में इसकी महत्ता का जिक्र किया। इस प्रशिक्षण में हरियाणा व पंजाब के 40 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण हासिल किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**24.02.2021**	--	--

फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुम्ब उत्पादन के लिए प्रयोग में लाएं किसान : डॉ. भाकर

हिसार/24 फरवरी/रिपोर्टर

किसान फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुम्ब उत्पादन के लिए प्रयोग में ला सकते हैं। इससे एक ओर जहां पर्यावरण प्रदूषित नहीं होगा वहीं किसानों की आय में भी बढ़ौतरी होगी। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहायक वैज्ञानिक डॉ. संदीप भाकर ने बतौर प्रशिक्षण के सह संयोजक कहे। वे विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित ऑनलाईन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया गया। संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। प्रशिक्षण के सह संयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि खुम्ब एक संतुलित आहार है जो पोषण व औषधीय गुणों से भरपूर है। खुम्ब में कैलोरी और वसा की मात्रा कम होने की वजह से यह न सिर्फ वजन को बढ़ने से रोकने और वजन घटाने में सहायक है बल्कि इसमें प्रोटीन, विटामिन सी, विटामिन बी, विटामिन डी, कॉपर, पोटाशियम, फास्फोरस, सेलेनियम, फाइओकेमिकल्स और एंटी ऑक्सीडेन्टस जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं जो व्यक्ति को विभिन्न तरह के रोगों से दूर रखने में मदद करते हैं। इसके अलावा कई औषधीय गुण भी विद्यमान होते हैं। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डीके शर्मा ने मशरूम के मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार करने की विधि पर प्रकाश डाला। पौध रोग विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राकेश चुघ ने ढींगरी खुम्ब तथा कीड़ा जड़ी खुम्ब को उगाने की विधि पर प्रकाश डाला। डॉ. मनमोहन ने खुम्ब में होने वाली मुख्य बिमारियों की रोकथाम के उपाय बताए। डॉ. जगदीप ने केसिंग मिश्रण को तैयार करने की व्यावहारिक जानकारी दी। डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने मशरूम में आने वाले मुख्य कीट, उनसे होने वाले नुकसान, लक्षणों व प्रबधंन के बारे में किसानों को जानकारी दी। डॉ. निर्मल कुमार ने खुम्ब को लाभकारी व्यवसाय बताते हुए इसकी महत्ता का जिक्र किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	**24.02.2021**	--	--

कृषि अवशेषों को जलाने की बजाय खुम्ब उत्पादन के लिए करें प्रयोगः डॉ. भाकर

खुम्ब उत्पादन तकनीक पर ऑनलाइन कार्यशाला का समापन

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। किसान फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुम्ब उत्पादन के लिए प्रयोग में ला सकते हैं। इससे एक ओर जहां पर्यावरण प्रदूषित नहीं होगा वहीं किसानों की आय में भी बढ़ोतरी होगी। उक्त विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहायक वैज्ञानिक डॉ. संदीप भाकर ने बतौर प्रशिक्षण के सह-संयोजक कहे। वे सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने बताया कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। प्रशिक्षण के सह-संयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि सफेद बटन खम्ब, ढींगरी खुम्ब व धान के पुआल की खुम्ब के लिए हरियाणा प्रदेश का मौसम अनुकूल है। उन्होंने बताया कि खुम्ब एक संतुलित आहार है जो पोषण व औषधीय गुणों से भरपूर है। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. के. शर्मा ने मशरूम के मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार करने की विधि पर प्रकाश डाला। पौध रोग विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राकेश चुघ ने ढींगरी खुम्ब तथा कीड़ा जड़ी खुम्ब को उगाने की विधि पर प्रकाश डाला। डॉ. मनमोहन ने खुम्ब में होने वाली मुख्य बिमारियों की रोकथाम के उपाय बताए। इस प्रशिक्षण में हरियाणा व पंजाब के 40 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण हासिल किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार न्यूज	**24.02.2021**	--	--

कृषि अवशेष जलाने की बजाय खुंब उत्पादन के लिए प्रयोग करें : डॉ. संदीप भाकर

हिसार, 24 फरवरी (राजकुमार) : किसान फसल अवशेषों को जलाने की बजाय इन्हें खुंब उत्पादन के लिए प्रयोग में ला सकते हैं। इससे एक ओर जहां पर्यावरण प्रदूषित नहीं होगा वहीं किसानों की आय में भी बढ़ोतरी होगी। यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहायक वैज्ञानिक डॉ. संदीप भाकर ने विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुंब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कही। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया गया। संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने प्रशिक्षणार्थियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इस प्रशिक्षण में खुंब से संबंधित विभिन्न विषयों को अनेक

खुम्ब उत्पादन तकनीक पर ऑनलाइन कार्यशाला का समापन

वैज्ञानिकों द्वारा विस्तार से साझा किया गया।

प्रशिक्षण के सह-संयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि सफेद बटन खुंब, ढींगरी खुंब व धान के पुआल की खुंब के लिए हरियाणा का मौसम अनुकूल है। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डीके शर्मा ने मशरूम के मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार करने की विधि पर प्रकाश डाला। पौध रोग विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राकेश चुघ ने ढींगरी खुंब तथा कीड़ा जड़ी खुंब को उगाने की विधि पर प्रकाश डाला। डॉ. मनमोहन ने खुंब में होने वाली मुख्य बीमारियों की रोकथाम के उपाय बताए। डॉ. जगदीप ने केसिंग मिश्रण को तैयार करने की व्यावहारिक जानकारी दी। डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने मशरूम में आने वाले मुख्य कीट, उनसे होने वाले नुकसान, लक्षणों व प्रबधंन के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी और साथ ही उन्होंने किसानों को खुंब गृह में सफाई रखने की विशेष सलाह दी। उन्होंने बताया कि इसकी साफ-सफाई का ध्यान रखने से इस प्रकार के कीड़े-मकोड़ों का कम प्रकोप होता है। डॉ. निर्मल कुमार ने खुंब का आर्थिक विश्लेषण के माध्यम से खुंब को लाभकारी व्यवसाय के रूप में इसकी महता का जिक्र किया। इस प्रशिक्षण में हरियाणा व पंजाब के 40 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण हासिल किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....दैनिक भास्कर....

दिनांक ..25..2..2021.. पृष्ठ संख्या ....2.... कॉलम ....2-6....

एचएयू का राष्ट्र स्तरीय कृषि मेला मार्च में होगा, पहली बार कृषि के क्षेत्र में दिए एचएयू के योगदान को जानेंगे किसान

विवि के अधिकारियों ने मेले की तैयारियां की शुरू, सितंबर में कोरोना के कारण वर्चुअल कृषि मेला हुआ था

भास्कर न्यूज | हिसार

देशभर के किसानों के लिए एक खुशखबरी है। एचएयू प्रशासन ने मार्च में किसानों के लिए राष्ट्र स्तरीय कृषि मेला आयोजित कराने का निर्णय लिया। दो दिवसीय होने वाले मेले की तारीख जल्द ही घोषित कर दी जाएगी। विभागीय अधिकारियों ने कृषि मेले की सभी तैयारियां पूरी करनी शुरू कर दी है। कृषि मेला आयोजित कराने का जिम्मा एचएयू के विस्तार शिक्षा निदेशालय को सौंपा गया।

एचएयू साल में दो राष्ट्र स्तरीय कृषि मेले आयोजित करता है। जिसमें एक सितंबर माह जबकि दूसरा मार्च या फिर अप्रैल माह में आयोजित किया जाता है। कोरोना के कारण बीती 29 सितंबर को ऑफ लाइन कृषि मेला आयोजित नहीं किया जा सका था। सूत्रों के अनुसार मार्च माह में आयोजित होने वाले कृषि मेले को लेकर असमंजस की स्थिति थी। मगर हाल ही में विवि प्रशासन ने निर्णय लिया है कि ऑफलाइन ही मार्च माह में राष्ट्र स्तरीय कृषि मेला आयोजित किया जाएगा।

वर्चुअल मेले ने बनाया था रिकॉर्ड

29 सितंबर को एचएयू ने किसानों के लिए वर्चुअल कृषि मेला आयोजित किया था। जिसमें दो लाख से अधिक किसानों ने भाग लिया था। एचएयू के कृषि मेले ने पंजाब कृषि विवि के रिकार्ड को भी तोड़ दिया था। यहीं नहीं किसानों ने भी वर्चुअल कृषि मेले की खूब सराहना की थी।

किसान गोष्ठियां भी होंगी आयोजित

कोरोना के कारण एचएयू में किसान गोष्ठियां भी नहीं हो पा रही थी। ऑनलाइन माध्यम से ही किसानों को फसलों के बारे में जानकारी दी जा रही थी। कुलपति का कहना है कि जल्द ही किसानों के लिए ऑफलाइन माध्यम से भी गोष्ठियां शुरू कर दी जाएगी। किसानों से सुझाव भी मांगे जायेंगे।

भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान करनाल के निदेशक का एचएयू दौरा

हिसार | कृषि वैज्ञानिक समय पर बिजाई की जाने वाली और अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें ताकि किसानों की आमदनी में इजाफा हो सके और वे खुशहाल हो सकें। उक्त विचार भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान करनाल के निदेशक डॉ. जीपी सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के गेहूं व जौ अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत वैज्ञानिकों से रूबरू हो रहे थे। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने विश्वविद्यालय में चल रहे विभिन्न अनुसंधान कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एके छाबड़ा, प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. सतीश खोखर सहित गेहूं व जौ अनुभाग के वैज्ञानिक मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....दैनिक भास्कर........

दिनांक 25.2.2021 .... पृष्ठ संख्या ....5.... कॉलम ....6-8....

प्याज-लहसुन की फसल में कीट प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान

एचएयू के वैज्ञानिक किसानों को नियमित रूप से दे रहे सलाह

भास्कर न्यूज | हिसार

लगातार मौसम में आ रहे बदलाव के कारण प्याज और लहसुन की फसल में कई तरह के रोग लगने की संभावना बनी रहती है। अगर किसान समय रहते इनका प्रबंधन नहीं करते हैं तो उन्हें नुकसान उठाना पड़ सकता है। समय पर प्रबंधन कर किसान आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। एचएयू के वैज्ञानिक किसानों को प्याज लहसुन में लगने वाले रोगों से बचाव की जानकारी दे रहे हैं।

एचएयू के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह और डॉ. आरएस ढिल्लो बताते हैं कि मौसम की अनुकूलता के आधार पर प्याज व लहसुन की फसलों में झुलसा, मृदुरोमिल, फफूंदी, बैंगनी झब्बा रोग और थ्रिप्स कीट रोग लग जाते हैं, जिसके कारण फसल खराब हो जाती है। झुलसा रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियां एक तरफ पीली और दूसरी तरफ हरी रहती हैं। मृदुरोमिल रोग में पत्तियों की सतह पर बैंगनी रोएंदार वृद्धि दिखाई पड़ती है, जो बाद में हरा रंग लिए पीली हो जाती हैं। दोनों रोगों की रोकथाम के लिए मैंकोजेब 75 डब्ल्यूपी 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए। बैंगनी धब्बा रोग से प्रभावित पत्तियों और तनों पर छोटे-छोटे गुलाबी रंग के धब्बे पड़ जाते हैं, जो बाद में भूरे रंग के होकर आंख के आकार के हो जाते हैं और इनका रंग बैंगनी हो जाता है। इसके प्रबधंन के लिए डिफेनोकोनाजोल 2.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। थ्रिप्स कीट पीले रंग के होते हैं। इनके शिशु व प्रौढ़ दोनों ही पत्तियों का रस चुसते हैं, जिसके कारण पत्तियों पर हल्के हरे रंग के लंबे-लंबे धब्बे दिखाई पड़ते हैं। जो बाद में सफेद रंग के हो जाते हैं। इसके प्रबंधन के लिए साइपरमेथ्रिन 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।

ट्राइटोन या सेंडोविट के घोल का छिड़काव करें

हिसार के कृषि रक्षा अधिकारी डॉ. अनुराग सांगवान बताते हैं कि प्याज और लहसुन की पत्तियां चिकनी होती हैं। उन पर दवा चिपकती नहीं है। इसलिए चिपचिपा पदार्थ ट्राइटोन या सेंडोविट एक मिलीलीटर प्रति लीटर घोल में मिलाकर छिड़काव करें। दवाओं के छिड़काव के कम से कम 2 सप्ताह बाद ही प्याज एवं लहसुन को खाने में प्रयोग करना चाहिए। छिड़काव कर नहाने के बाद कपड़ों को भी अच्छी तरह साबुन से धो लेना चाहिए। एचएयू के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि लहुसन और प्याज की फसल में कीटों का प्रबंधन कर किसान होने वाले नुकसान से तो बच सकते हैं साथ ही आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। विवि में ट्रेनिंग देकर भी किसानों को फसलों में लगने वाले रोगों के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक जागरण.....

दिनांक 25.2.2021...पृष्ठ संख्या.....5.....कॉलम....1-5.....

मौसम का पारा चढ़ा तो सर्दी ने बांधा बिस्तर

राजस्थान में एंटी साइक्लोनिक सिस्टम बनने से हवा में बार-बार हो रहा बदलाव, नारनौल में सबसे गर्म

जागरण संवाददाता, हिसार : राजस्थान में एंटी साइक्लोनिक सिस्टम बनने से हवा में बार-बार बदलाव हो रहा है। इसके कारण अचानक गर्मी बढ़ गई है। नारनौल और हिसार में माघ के महीने में ज्येष्ठ के महीने जैसा आभास लोगों को अभी से होने लगा है। इतना ही नहीं रात का तापमान दिन के मुकाबले में काफी कम है।

नारनौल में बुधवार का अधिकतम तापमान 34.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो सामान्य से 10.8 डिग्री अधिक है। इतना ही नहीं हिसार में तामपान बढ़कर 32.4 डिग्री हो गया जो सामान्य से 11.3 डिग्री अधिक है। यहां बता दें कि मंगलवार को नारनौल में तापमान 33.8 डिग्री सेल्सियस और हिसार में 32 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। इस तापमान ने अपने पिछले वर्ष का रिकॉर्ड तोड़ दिया था। बुधवार को मंगलवार से भी अधिक तापमान दोनों जिलों में दर्ज किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि मौसम विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. मदन खिचड़ ने बताया कि राज्य में मौसम आमतौर पर 27 फरवरी तक खुश्क रहने, दिन के तापमान में हल्की बढ़ोतरी होने तथा उत्तर पश्चिमी हवा चलने से रात्रि तापमान में हल्की गिरावट होने की संभावना है। परंतु पश्चिमी विक्षोभ के आंशिक प्रभाव के कारण 28 फरवरी से मौसम में बदलाव संभावित है।

हिसार : दो दिन से मौसम मे हुए बदलाव और दिन में पड़ने लगी गर्मी में एच ए यू के चार नंबर गेट के समीप फूलों की क्यारी के पास से गुजरती युवतियां । • गुलशन बजाज

तापमान बढ़ने के यह हैं तीन कारण

- गर्मी बढ़ने के तीन मुख्य कारण हैं इसमें पहला कारण है कि दक्षिणी पश्चिमी और पश्चिमी हवा चलने से तापमान बढ़ रहा है।
- दूसरा कारण है कि पश्चिमी विक्षोभ मैदानी क्षेत्रों में न जाकर पहाड़ों की तरफ जा रहे हैं, उससे हवा में बार-बार बदलाव हो रहा है।
- तीसरा कारण है कि मध्य भारत में पुरवाई हवा अधिक चलने के कारण एंटी साइक्लोनिक सिस्टम राजस्थान के पास बना हुआ है। जिससे बार बार हवा में बदलाव हो रहा है।